Prof. Shubh Kumar

Assistant Professor in Sanskrit

Govt. Degree College, Kathua.

E-Content of Sanskrit:

B.A. 5th Sem, Unit-III, DSE. JU

1. महर्षि वाल्मीकि कृत रामायण में आश्रमों की संख्या।
2. परवर्ती ग्रन्थों के लिए महाभारत एक प्रेरणा स्रोत।
3. रामायण के प्रमुख पात्रों का चरित्र–चित्रण संस्कृत भाषा में लिखिए– श्रीरामः, सीता, भरतः।
4. महाभारत के प्रमुख पात्रों का चरित्र–चित्रण संस्कृत भाषा में लिखिए– श्रीकृष्णः, अर्जुनः, युधिष्ठिरः

1. महर्षि वाल्मीकि कृत रामायण में आश्रम व्यवस्था–

भारत में प्राचीन काल में सामाजिक व्यवस्था के दो स्तम्भ थे वर्ण और आश्रम। मनुष्य की प्रकृति–गुण, कर्म और स्वभाव के आधार पर मानव मात्र का वर्गीकरण चार वर्णों में हुआ था। व्यक्तिगत संस्कार के लिए जीवन को शतायु मान कर चार आश्रमों ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और सन्यास में विभाजन किया गया था। अमरकोष के अनुसार आश्रय का अर्थ है जिसमें सम्यक् प्रकार से श्रम किया जाए वह आश्रम है अथवा आश्रम जीवन की वह स्थिति है जिसमें कर्त्तव्य पालन के लिए पूर्ण परिश्रम किया जाए।

आश्रम व्यवस्था का प्रादुर्भाव वैदिक युग से हुआ है उसके बाद क्रमशः विकास हुआ। मनुस्मृति, पुराण और स्मृति ग्रन्थों में भी वर्णन हैं। रामायण में भी वैदिक काल से चली आई आश्रम व्यवस्था का प्रतिपादन है। रामायण भारतीय सभ्यता तथा संस्कृति का आधार है। मनु का कथन है ''आश्रमात् आश्रमं गच्छेत्'' अर्थात् एक आश्रम से दूसरे आश्रम में जाना चाहिए। आश्रम व्यवस्था जीवन को सुव्भवस्थित बनाते हुए धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष प्राप्ति में सहायक है। रामायण का एक आदर्श ग्रन्थ है तथा श्रीराम मर्यादा पुरूषोत्तम हैं। रामायण के सभी पात्र आदर्श की प्रतिमूर्त्ति हैं।

प्रथम आश्रम ब्रह्मचर्य है। जीवन को शतायु मान कर प्रत्येक आश्रम 25, 25 वर्ष का होता है। अतः 1 से 25 वर्ष तक ब्रह्मचर्य आश्रम का काल होता है। इसमें गुरूकुल में रहकर ब्रह्मचर्य का पालन करना प्रमुख कर्तव्य है। इसका मुख्य लक्ष्य विद्या का ग्रहण करना। व्रत–अनुष्ठान तथा नियमों का पालन करना। शरीर से, मन से, बुद्धि–स्मृति से तथा शिक्षा आदि से अपने–आपको परिपूर्ण बनाना है।

द्वितीय आश्रम गृहस्थ है। वर्षमान के अनुसार 26 से 50 वर्ष तक गृहस्थ आश्रम होता है। गृहस्थ आश्रम तीनों आश्रमों का आधर है। इस आश्रम में मनुष्य वेदों के अध्ययन द्वारा ऋषि ऋण से, यज्ञ द्वारा देव ऋण से तथा संतान उत्पन्नि द्वारा पितृ ऋण से मुक्त होता है। इसमें विवाह करके व्यक्ति घर, परिवार, सामाजिक कर्त्तव्य निभाता है। नौकरी–व्यवसाय द्वारा धन संचय करता है। धर्म, अर्थ, काम को पूरा करते हुए मोक्ष के लिए धार्मिक कृत्य भी करता है। माता–पिता, पत्नी तथा संतान के प्रति अपने कर्त्तव्य निभाता है।

तृतीय आश्रम वानप्रस्थ है। वर्षमान के अनुसार 51 से 75 वर्ष तक होता है। इस आश्रम में मनुष्य गृहस्थ आश्रम के उत्तरदायित्वों को पूरा करके प्रवेश करता है। निवृत्ति मार्ग का यह प्रथम चरण है। इसमें त्याग का आंशिक पालन होता है। मनुष्य सक्रिय जीवन से दूर हो जाता है। त्याग तथा यति धर्म का पालन किया जाता इसमें तप द्वारा प्रभुज्ञान और मोक्ष प्राप्ति के रहस्यों को जानता है।

चतुर्थ आश्रम सन्यास है। 76 से 100 साल तक सन्यास आश्रम होता है। प्रथम तीन आश्रमों के कर्त्तव्यों का पालन करके सन्यास आश्रम में प्रवेश होता है। इसमें जीवन प्रति मोह आदि त्याग कर जितेन्द्रिय बनकर सन्यासी जीवन विताता है। वेद तथा धर्म का प्रचार करता है। इस प्रकार रामायण में चारों आश्रमों का वर्णन आया है। यह आश्रम व्यवस्था जीवन का आधार है।

2. परवर्ती ग्रन्थों के लिए महाभारत एक प्रेरणास्रोत।

महाभारत पर अथवा महाभारत के कथानक पर आधारित ग्रन्थों का वर्णन करो।

संस्कृत साहित्य में रामायण, महाभारत और श्रीमद्भागवत ये तीनों उपजीव्य काव्य हैं। महाभारत की प्रेरणा लेकर अनेक कवियों, लेखकों तथा नाटककारों ने विभिन्न ग्रन्थों की रचना की है। महाभारत ज्ञान का विश्वकोष है। जैसे वेद व्यास जी का महाभारत के प्रति कथन है– ''यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत् क्वचित्'' अर्थात् जो कुछ इस महाभारत में है वह दूसरे स्थलों पर है, परन्तु जो इसके भीतर नहीं है वह अन्यत्र कहीं भी नहीं है। महाभारत की प्रेरणा से निम्नलिखित ग्रन्थ लिखे गये हैं।

उरूभंग, दूतवाक्यम् पंचरात्र, बालचरितम् दूतघटोत्कच, कर्णभार और मध्यम व्यायोग इनकी रचना नाटककार भास ने की है। कालिदास ने अभिज्ञानशाकन्तुल नाटक की रचना की है। इसी प्रकार अन्य ग्रन्थ हैं–वेणीसंहार, सुभद्रा धनंजय, बालभारत, नैषधानन्द, धनंजय व्यायोग, नल विलास, किरातार्जुनीय, शिशुपालवध, कीचकवध, भारतमंजरी, नैवधीयचरित, पाण्डवचरित और नलचम्पू आदि।

1. **उरूभंग–** यह नाटककार भारत रचित एक एकांकी नाटक है। इसमें भीम, द्वारा द्रौपदी के अपमान का बदला दुर्योधन की जंघा को तोड़कर लेने की कहानी वर्णित है।

2. **दूतवाक्यम्–** यह नाटक भारत द्वारा लिखित एक एकांकी है। इसमें महाभारत के युद्ध से पहले श्री कृष्ण पाण्डवों की ओर से सन्धि प्रस्ताव लेकर दुर्योधन की सभा में जाना और दुर्योधन द्वारा सन्धि प्रस्ताव अस्वीकार करते हुए यह कहना ''विना युद्ध के सुई की नोक के बरावर भूमि नहीं दूँगा'' का वर्णन है।

3. **पंचरात्रम्–** यह तीन अंकों का नाटक महाभारत की एक घटना को लेकर रचा गया है। इसमें यज्ञ की समाप्ति पर द्रोणाचार्य ने दुर्योधन से दक्षिणा माँगी कि पाण्डवों को आधा राज्य दे हो। तब दुर्योधन ने कहा कि यदि पाँच रात्रों में पाण्डव मिल जाएँगे तो ऐसा कर दूँगा। द्रोणाचार्य के प्रयास से पाण्डवों का मिलना तथा दुर्योधन द्वारा आधा राज्य देने का वर्णन है। यह घटना कल्पित है और महाभारत में नहीं मिलती है।

4. **बालचरितम्–** यह भास रचित पाँच अंकों का नाटक है। इसमें श्री कृष्ण का कंस के कारागार में जन्म, बाल्यकाल में मित्रों के साथ विविध क्रीड़ाएँ, गौएँ चराना, मक्खन खाना, पूतना राक्षसी को मारना तथा अन्त में कंस को मारने आदि का वर्णन है।

5. **दूतघटोत्कच–** यह एकांकी नाटक है। इसमें अभिमन्यु की मृत्यु के बाद श्री कृष्ण भीम के पुत्र घटोत्कच को दूत के रूप में धृतराष्ट्र के पास भेजना, दुर्योधन द्वारा अपमान करना और अन्त में दुर्योधन का कहना कि 'मैं अपने बाणों द्वारा उत्तर दूँगा'' इत्यादि कथा वर्णित है।

6. **मध्यम व्यायोग–** यह एकांकी नाटक है। इसमें मध्यम पाण्डव भीम द्वारा घटोत्कच के हाथ से एक ब्राह्मण पुत्र की रक्षा करना, भीम का पुत्र घटोत्कच से मिलन और पत्नी हिडिम्बा से पुनर्मिलन की कथा आती है।

7. **कर्णभार–** यह एकांकी नाटक है। इसमें कर्ण पर सेना का भार आना अर्थात् कौरव सेना का सेनापति बनना तथा ब्राह्मण वेशधारी इन्द्र को दान में अपने कवच व कुण्डल देने का वर्णन है।

8. **अभिज्ञान शाकुन्तलम्–** यह सात अंको का नाटक महाकवि कालिदास द्वारा रचित है। इसमें ऋषि विश्वामित्र और मेनका अपसरा की पुत्री श्कुन्तला तथा हस्तिनापुर के राजा दुष्यन्त की मिलने, विछड़ने तथा पुनः मिलने की कथा है। राजा दुष्यन्त शिकार करते हुए संयोगवश महर्षि कण्व के आश्रम में जाते है यहां राजा की भेंट शकुन्तला से होती है। शकुन्तला की जन्म कथा सुनकर राजा उससे प्रेम करता है और दोनों आपसी सहमति से गान्र्धव विवाह करते हैं। दुर्वासा ऋषि के शापवश दुष्यन्त शकुन्तला को भूल जाता है तथ अन्त में शकुन्तला को स्व नाम अंकित दी हुई अगूँठी (अभिज्ञान) को देखकर पुनःस्मरण आता है। परिणाम स्वरूप पत्नी शकुन्तला तथा पुत्र भरत के साथ ऋषि मारीच के आश्रम में पुनर्मिलन हेाता है।

9. **शिशुपालवध–** यह महाकाव्य कवि माघ द्वारा रचित है। यह बीस संर्गों में बटां है। यह महाकाव्य मुख्यतया श्रीमद्भागवत तथा गौण रूप से महाभारत की प्रेरणा से लिखा गया है। इसमें श्रीकृष्ण के द्वारा युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में चेदि देश के राजा शिशुपाल के वध का सांगोपांग वर्णन है।

10. **शिरातार्जुनीय–** यह महाकाव्य महाकवि भारवि द्वारा रचित है। इसमें 18 सर्ग हैं। इसमें अर्जुन पाशुपत अस्त्र पाने के लिए इन्द्रकील पर्वत पर तपस्या करता हैं। अर्जुन की कठिन तपस्या भंग करने के लिए इन्द्र

अपसराओं को भेजता है पर वे सफल नही होती हैं। इन्द्र स्वयं अर्जुन को दर्शन देकर कहते हैं कि शिव उपासना से आपका मनोरथ पूर्ण होगा। अर्जुन शिव की घोर तपस्या करता है। शिव अर्जुन की परीक्षा के लिए मानवी सुअर भेजते है और स्वंय किरात (शिकारी) का रूप धारण करते हैं। अर्जुन और किरात एक साथ सुअर पर वाण छोड़ते हैं दोनों में बाहु युद्ध होता है। अंत में शिव प्रसन्न होकर दर्शन देते हैं तथा पाशुपत नामक अस्त्र भेंट करते हैं।

3. रामायण के प्रमुख पात्रों का चरित्र–चित्रण संस्कृत भाषा में लिखिए–

श्रीरामः

श्री रामः अयोध्यायाः राज्ञः दशरथस्य ज्येष्ठः पुत्रः आसीत्। दशरथस्य तिस्रः भार्याः आसन्। तासां नाम कौशल्या, सुमित्रा कैकेयी च आसीत्। कौशल्या याः पुत्रः रामः, सुमित्रायाः पुत्रौ लक्ष्मणः शत्रुघ्नः च, कैक्याः पुत्रः भरतः च आसीत्। रामः विश्वमित्रस्य यज्ञस्य रक्षार्थं आश्रमे अगच्छत्। रामस्य पत्नी राज्ञः जनकस्य पुत्री सीता आसीत्। रामः आज्ञाकारी, मर्यादावान्, पुरूषोत्तमः च आसीत्। सः पितुः आज्ञां शिरो धारय वनवासं अगच्छत्। वनवासे साधुवेषेण रावणः सीतायाः अपहरणं अकरोत्। रामः रावणं हत्वा अयोध्यां प्रति आगच्छत्। सः अयोध्यायाः सिंहासने अतिष्ठत्। रामस्य राज्यं 'रामराज्य' इति नाम्ना प्रसिद्धं आसीत्। तरय शासने सकला प्रजा सुखी, सम्पन्ना चासीत्।

'सीता'

सीता मिथिला नरेशस्य जनकस्य पुत्री आसीत्। तस्याः धर्ममाता सुनयना आसीत्। सीतायाः स्वयंवरे श्री रामेण सह विवाहः अभवत्। सा विवाह–उपरान्तं

स्व पत्युः रामस्य गृहे अयोध्यां अगच्छत्। सा रामस्य सुखस्य दुःखस्य च सह भागिनी आसीत्। सा रामस्य वनवास–काले रामेण सह वनवासे गता। सा तत्र पंचवट्यां स्व पतिना सह अवसत्। तस्याः साधुवेषेण रावणः अपहरणं अकरोत्। तस्याः रावणरय मृत्योः उपरान्तं अग्निपरीक्षा अभवत्। सा अयोध्यां आगत्य राजमहिषी–पदं प्राप्तवान्। रजकस्य वचनैः रामः सीतायाः त्यागः अकरोत्। सीतायाः लवः कुशः च पुत्रौ स्तः। सीतायाः जन्मोत्पत्तिः वसुधायाः अभवत्। सीता अन्ते अपि वसु धायां एव लीना अभवत्।

भरतः

भरतः अयोध्यायाः नृपस्य दशरथस्य पुत्रः आसीत्। तस्य मातुः नाम कैकयी आसीत्। तस्य पितुः तिस्रः भार्याः कौशल्या, सुमित्रा कैकयी च आसन्। कौशल्याः पुत्र रामः आसीत्। सुमित्रायाः पुत्रौ लक्ष्मणः शत्रुध्नः च स्तः। भरतस्य रामः, लक्ष्मणः शत्रुध्नः च त्रयः भ्रातरः आसन्। भरतः बाल्यकाले स्व मातुलस्य गृहे निवसतिस्म। सः रामस्य वनवासे गमनोपरान्तं, पितुः दशरथस्य मृत्यूपरान्तं च अयोध्यां प्रति आगच्छत्। सा अयोध्यायां आगत्य सर्वं वृत्तान्तं अजानत्। भरतः रामस्य उपानहं सिंहासने निधाय रामस्य भक्तिं स्नेहं च मनसि धारय राज्यं अकरोत्। सः श्रेष्ठ नृपः आसीत्। सः भ्रातृप्रेमी पितुः आज्ञापालकः च आसीत्। भरतः चतुर्दश वर्षाणि राज्यं अकरोत सः रामंस्य अयोध्यायां प्रति आगमने सर्वं राजशासनं श्रीरामं असमर्पयत्।।

4. महाभारत के प्रमुख पात्रों का चरित्र–चित्रण संस्कृत भाषा में लिखिए–

श्रीकृष्णः

श्री कृष्णस्य जन्म पञ्चसहस्र वर्षाणि प्राक् मथुरायां अभवत्। तस्य मातुः नाम देवकी पितुः च नाम वासुदेवः आसीत् । तस्य पालन–पोषणं गोकुले नन्दः

यशोदा च अकुरुताम्। तस्य ज्येष्ठः भ्राता बलरामः आसीत्। तस्य मित्रस्य नाम सुदामा आसीत्। कृष्णः साक्षात् विष्णोः अवतारः आसीत्। तस्य सखी राधा आसीत्। तस्य पत्नी रुकिमनी आसीत्। तस्य मातुलः निर्दयः कंसः आसीत् । सः स्व मातरं पितरं च कंसस्य कारागारात् अमुञ्चयत्। सः कंसस्य वधं अकरोत्। सः महाभारतस्य युद्धे पाण्डवस्य पक्षे आसीत्। सः कुरुक्षेत्रे युद्धस्थले मोहग्रस्तं अर्जुन गीतायाः उपदेशः अयच्छत्। कृष्णस्य सहाय्येन एव पाण्डवाः युद्धे सफलाः विजयाः च अभवन् । गीतायाः उपदेशः अस्ति यत् कर्म एव पूजा अस्ति। श्रीकृष्णं प्रति सर्वे जनाः नतमस्तकाः भवन्ति।

अर्जुनः

अर्जुनः महाराज्ञः पाण्डोः तृतीयः पुत्रः आसीत्। तस्य मातुः नाम कुन्ती पृथा वा आसीत्। सः पराक्रमी महारथी यौद्धा, श्रेष्ठधनुर्धरः च आसीत्। सः द्रोणाचार्यस्य योग्यतमः शिष्यः आसीत्। तस्य युधिष्ठिरः, भीमः, नकुलः सहदेवः च चत्वारः भ्रातरः आसन्। सर्वे पञ्च भ्रातरः 'पाण्डव' इति नाम्ना सुविख्याताः आसन्। राज्ञः द्रुपदस्य पुत्र्याः द्रौपद्याः सह स्वयंवरे विवाहं अकरोत्। अर्जुनः द्वादश वर्षाणां वनवासे नाग कन्यया उलूप्या सह विवाहं अकरोत्। उलूप्याः इरावान् नाम पुत्रः आसीत्। सः मणिपुर नरेशस्य पुत्र्या चित्रांगदया सह विवाहं अकरोत्। चित्रांगदायः पुत्रः वभ्रुवाहनः आसीत्। श्री कृष्णस्य स्वसया सुभद्रया सहापि विवाहं अकरोत्। तस्य पुत्रः अभिमन्युः आसीत्। महाभारतस्य युद्धे श्रीकृष्णः अर्जुनः गीतायाः उपदेशः अयच्छत्। अर्जुनः श्रीकृष्णस्य शिष्यः सुहृदः च आसीत्।

युधिष्ठिरः

युधिष्ठिरः हस्तिनापुर नगरस्य महाराज्ञः पाण्डोः ज्येष्ठः पुत्रः आसीत्। तस्य मातुः नाम कुन्ती आसीत्। सः धर्मराज्ञः अंशः आसीत्। सः धर्मात्मा, सत्यवादि यशस्वी संकलपवान् च आसीत्। तस्य भीमः, अर्जुनः, नकुलः सहदेवः च चत्वारः भ्रातरः आसन्। सर्वे पञ्च भ्रातरः 'पाण्डव' इति नाम्ना सुविख्याताः आसन्। धृतराष्ट्रः युधिष्ठिरं शिक्षायां पूर्णे सति युवराजः नियुक्तवान्। सः दिग्विजयं अकरोत्। सः राजसूयं नामकं यज्ञं अकरोत्। सः महाभारतस्य युद्धोपरान्तं हस्तिनापुर सिंहासने अतिष्ठत्। सः राज्ञः शिवेः पुत्र्या देविकया सह विवाहं अकरोत्। तस्य यौधेयः नामकः पुत्रः आसीत्। सः अभिमन्योः पुत्रस्य परीक्षितस्य राज्याभिषेकं अकरोत्। युधिष्ठिरः अन्ते महाप्रस्थानाय हिमालयं प्रति अगच्छत्।